HISTORICAL BACKGROUND OFTEMPLE OF JUKHALA

PROJECT SUBMITTED BY SOURABH
CLASS ROLL NO - 20125
HPU ROLL NO.- 1210440078
GOVERNMENT COLLEGE JUKHALA
BILASPUR HP.

SESSION 2023-24

PROJECT SUBMITTED TO SUDAMA RAM
ASSOCIATE PROFFSSOR
DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

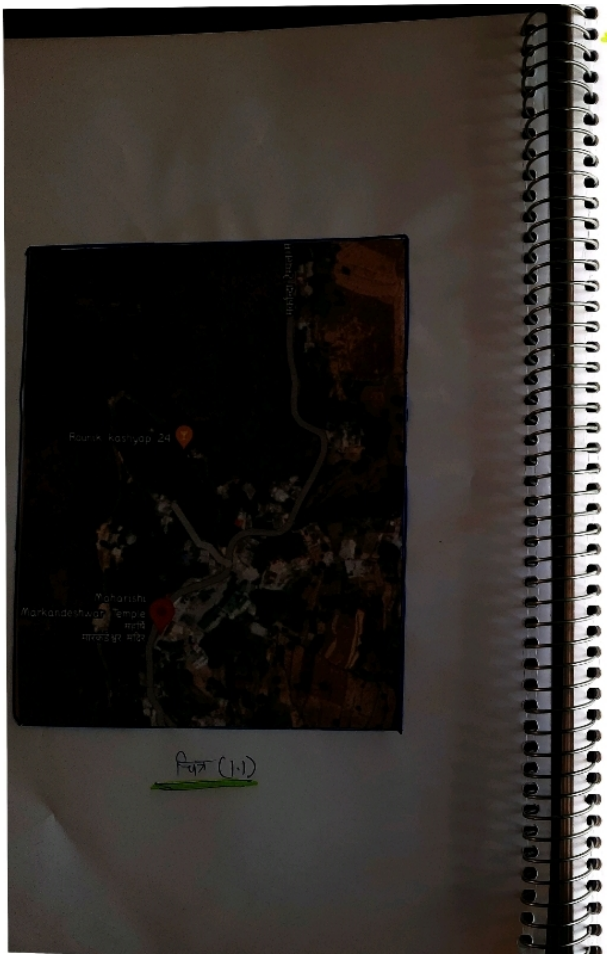

चित्र (1.1)

Loaction :-

⇒ National Highway (NH) से दूरी :

जैसा कि चित्र (1.1) मे दर्शाया गया है कि ऋषि मार्कण्डेय मंदिर की दूरी गसोड चौक (NH) से करीब 0.5 mil = 0.852 km की दूरी पर है। जो कि यहां आने वाले भक्तो के लिए सबसे कम दूरी वाला रस्ता है। यह एक पैदल आने व जाने का रास्ता है। परन्तु गसौड चौक से 500 मीटर पीछे एक रास्ता है। परन्तु यह सड़क मार्ग है जो कि वाहनो के लिए सुगम है। जिसमें वाहनों के आने-जाने के लिए सुविधा है। ताकि सभी भक्त अपने बूढ़े माता-पिता को भी मन्दिर के दर्शन करवा सके। जो कि पैदल यात्रा नही कर पाते। मार्कण्डेय मन्दिर को मैप के आधार पर भी देख सकते है जिससे यह पता लगाया जा सकता है। कि मार्कण्डेय की स्थिती क्या है इसके अलावा मैप से मार्कण्डेय जाने का सबसे नजदिकी रास्ते का भी पता चल जाता है।

मार्कण्डेय ऋषि कथा :-

एक पौराणिक कथा के अनुसार ऋषि मार्कंडेय कुंड इस क्षेत्र में एक ऋषि अपनी पत्नी के साथ बच्चा पैदा करने में असमर्थ थे। उन्होंने कई वर्षों तक भगवान शिव से प्रार्थना की ऋषि की भक्ति से खुश होकर उन्हें भगवान शिव ने लड़के का आशीर्वाद दिया। जिसे ऋषि ने नाम दिया मार्कंडेय। लेकिन भगवान शिव ने यह भी कहा कि जब उसका लड़का 12 साल का हो जाएगा तो वह मर जाएगा। ऋषि इस बात को लेकर चिंतित था। क्योंकि उसे हर दिन यही डर रहता था कि वो एक दिन अपने बच्चे को खो देगा।

जब मार्कंडेय बड़ा हुआ और सब कुछ समझने लगा तो उसने अपने पिता से पूछा कि आप इतने चिंतित क्यों हो। सच्चाई जानने के बाद मार्कण्डेय ने भगवान शिव से प्रार्थना की। जब भगवान शिव मार्कंडेय के सामने आए तो वह बैशाखी का दिन था। भगवान शिव मार्कंडेय के और समर्पण से काफी खुश हुए। और उन्हें लम्बी आयु का वरदान दिया।

उसी समय उस स्थान पर पवित्र झरना बहने लगा। उस झरने को चार धाम यात्रा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

इससे पहले जब यमराज जी मार्कंडेय को 12 वर्ष पूर्ण होने के बाद सवर्ग को लेने आए थे तो मार्कंडेय जी भगवान शिवलिंग की मूर्ति से चिपक गए थे। और भगवान शिव ने यमराज जी से अनुरोध किया और मार्कंडेय जी को लम्बी आयु का वरदान दिया।

मार्कंडेय जी की मूर्ति का चित्र

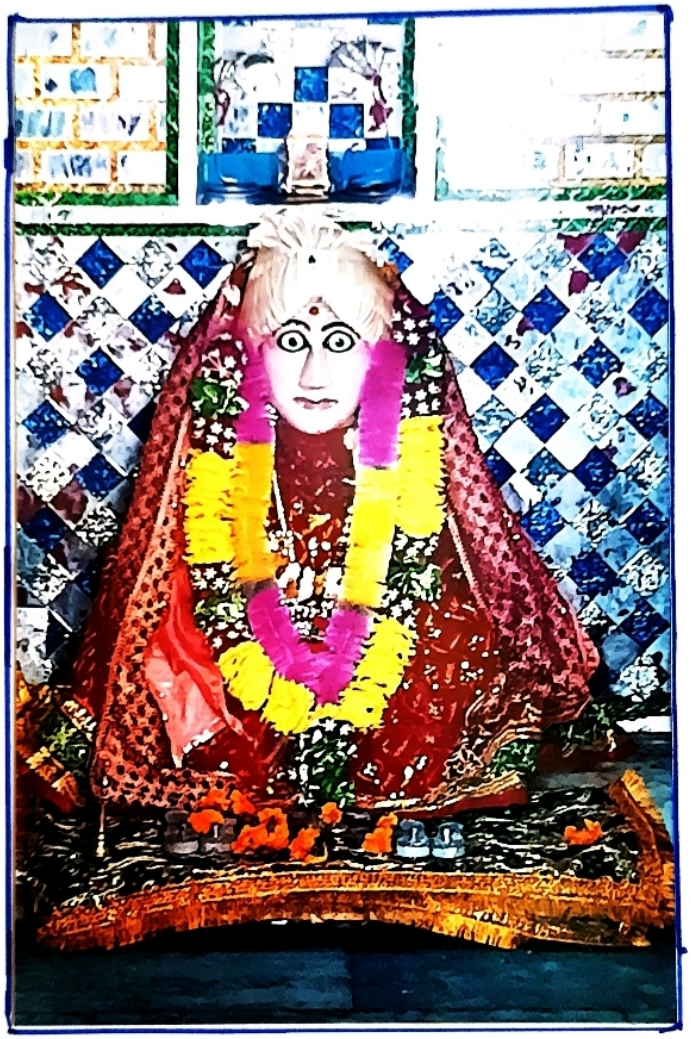

यह मार्कंडेय जी मंदिर की मुख्य मूर्ति है। जिसके दर्शन करने के लिए भक्त दूर-2 से आते हैं। तथा भारी मात्रा में दर्शन के लिए आते हैं। इस मन्दिर में सबसे अधिक लोग वैशाखी के समय मेले लगने पर आते हैं।

भक्तों की संख्या :

इस मन्दिर में हर साल वैशाखी मेले पर लगभग लाखों सैलानी यात्रा करने आते हैं। तथा यह स्थान चार धाम यात्रा करने वालों के लिए महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है।

चढ़ावा :

इस मन्दिर का वार्षिक चढ़ावा लगभग 10 लाख के करीब चढ़ाया जाता है। इसका उपयोग मंदिर की देखरेख के लिए किया जाता है।

पर्यटन और दर्शनी स्थल :

मार्कण्डेय ऋषि मंदिर हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर शहर से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है आप अगर शहर की यात्रा पर हैं तो इसके साथ ही मंदिर सैर भी कर सकते हैं। व्यास गुफा सतलुज नदी के तट पर स्थित है। जहां महाकाव्य महाभारत के लेखक ऋषि व्यास तपस्या के दिनों में यहां रहते हैं। यह गुफा 610 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। और सतलुज के बाएं किनारे पर स्थित है। इन गुफाओं की वजह से इस शहर को पहले व्यासपुर भी कहा जाता था।

पवित्र जल धारा :

यह मंदिर में प्राकृतिक रूप से उत्पन्न जल धारा है। इस जल से स्नान करने यहां हर साल लाखों श्रद्धालु। भक्त आते हैं। इस जल से स्नान करने से अनेक प्रकार के चर्म रोगों से छुटकारा मिलता है तथा लोग इस जल से नहाकर अपने पापों को भी धोते हैं।

यह जलधारा मन्दिर का प्रमुख भाग है।

घंटियां :

यह मन्दिर प्रायः काफी भागों में बंटा हुआ है। इस लिए यहां घंटियों की संख्या काफी अधिक है। यहां घंटियों की संख्या लगभग 50 के करीब होगी। इन घंटियों के दर्शन नीचे दिए गए चित्र में है।

यह घंटी मंदिर की सबसे बड़ी घंटी है। इसका वजन लगभग 80 से 30 किलो के करीब होगा। यह मंदिर में मुख्य मूर्ति के पास लगाई गई है।

राख — (हवन)

यह मारकण्डेय मन्दिर का प्रमुख स्थान है जहाँ पुजारी अपनी तपस्या करते हैं। पुजारे हवन करके मन्दिर की पवित्रता बढ़ाते हैं। यहां पर लाखो की संख्या में लोग भी आते हैं तो यहां पर पुजारियों के द्वारा हवन क्रिया को पुरी करते हैं। और लोग यहां पर आकर शुद्धिकरण करते हैं। हवन प्रक्रिया द्वारा वे अपने कर्मो को भी शुद्ध करते हैं।

नैना देवी की मूर्ति-

यह मूर्ति मार्कंडेय मन्दिर में स्थापित की गई है। यह मूर्ति मन्दिर की शोभा बढ़ाती है। यहां हजारों लोग नैना देवी के दर्शन के लिए आते हैं। और मन्दिर की शोभा और बढ़ाते हैं। मूर्ति दशहरा हर साल यहां हजारों की संख्या में श्रद्धालु यहां पर आते हैं। मूर्ति की पूजा करते हैं। यह मूर्ति मुख्य मार्कंडेय की मूर्ति के दायें किनारे में स्थित है।

लक्ष्य और उद्देश्य :-

इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य जुखाला क्षेत्र के स्थानीय देवी देवताओं के मंदिरों की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि को जानना तथा उसका अध्ययन करना है।

प्रमुख प्रविधि -

इस प्रोजेक्ट में हम जुखाला के स्थानीय आधार पर विभिन्न लोगों से तथा मंदिर के कार्य कर्ताओं से मिलकर उनसे प्रश्न पूछकर मंदिरों के इतिहास के बारे में प्राथमिक आंकड़ों को एकत्रीत किया है।

इसके अतिरिक्त मंदिरों में जाकर मंदिर में ऐतिहासिक वस्तुओं को देखा तथा मंदिर कमेटी के कुछ सदस्यों से उनके संदर्भ में जानकारी प्राप्त की है।

विश्लेषण -

इस प्रोजेक्ट रिपोर्ट को जुखाला क्षेत्र के मंदिरों की ऐतिहासिक तथा अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए तैयार किया गया है।

एतिहासिक भूमि :-

ऋषि मार्कंडेय मंदिर बहुत प्राचीन है। मान्यता के अनुसार कहा जाता है कि जो इस मंदिर में सच्चे दिल से सन्तान की मांग रखकर इस मन्दिर में आता है उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होती है। क्योंकि ऋषि मार्कंडेय के माता-पिता ने उसे शिव भगवान जी से तपस्या करके मांगा था।

प्रमुख उत्सव व त्योहार :-

वैशाखी व मार्कंड मेला इस क्षेत्र के मुख्य उत्सव व त्योहार हैं। इस दिन लाखों श्रद्धालु मार्कंडेय मंदिर के प्राकृतिक जल से स्नान करने आते हैं तथा 5-6 दिन चलता है। इस मेले को वैशाखी का मेला भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त मेले को वैशाखी का मेला भी कहा जाता है। अतिरिक्त मेले में बहुत से देवी-देवता भी इस मेले की शोभा को बढ़ाते हैं।

पूजा अर्चना →

इस मन्दिर में दिन में दो बार पूजा की जाती है। तथा इस पूजा में गांव के आस-पास के लोग पूजा करने के लिए आते हैं। पूजा का समय :-

सुबह : 06:00 बजे

रात : 08:00 बजे व सर्दियों में 07:00 बजे

मंदिर के खुलने तथा बंद होने का समय :-

सर्दियों में सुबह 6 बजे मंदिर तथा 8 बजे शाम को गर्मियों में बंद होता है। गर्मियों में मन्दिर 5 बजे तथा बंद शाम को 9 बजे होता है।

मन्दिर कमेटी :-

मंदिर के सभी कार्यों का संचालन
"कृषि मार्केटिंग मंदिर कमेटी" के द्वारा
किया जाता है। OFFical members → Sub-division, Chairman
Deputy superintendant of police [Bilaspur] Member Tehsil-Sadar

निष्कर्ष

इस प्रोजेक्ट से मैंने अपने आस-पास के मंदिरों
को बहुत गहराई से जाना है।
अंत में मैं इस "Historical Background of
temple of Jukhala" परिलोजन को कहते हुए
मैंने जो अनुभव लिए हैं। मैं उन उपलब्धियों को
आपके समक्ष साझा करना चाहता हूँ। मैंने दिए
गए विषयों के बारे में सारी नई बातें सीखी।
सबसे अच्छी बात, जो कि मैं आपके समक्ष
साझा करना चाहता हूँ वह यह है कि मैंने
इस विषय में अधिक रुचि विकसित की।

इस परिलोजन में मुझे "भूगोल
विषय की वास्तविक जानकारी प्राप्त की है।
हमारे लिए यह सुखद बात है। मैंने इस
परियोजना में करने वाले हर एक कार्य का
आनंद लिया।

धन्यवाद।

HISTORICAL BACKGROUND OF TEMPLE'S OF JUKHALA

PROJECT SUBMITTED BY ANISH

CLASS. ROLL NO. 21134

HPU ROLL NO. 1210440007

PROJECT SUBMITTED TO PROF.
SUDAMA RAM
DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
GOVERNMENT COLLEGE JUKHALA
BILASPUR H.P.

SESSION 2023-2024

★ Location (📍) —:

⇒ National Highway (NH) से मंदिर की दूरी —:

जैसा कि चित्र (1.1) और (1.2) में दर्शाया गया है कि ऋषि मारकंडेय मंदिर की दूरी गसौड़ चौक (NH) से करीब 0.5 mil = 0.852 Km है। जो कि यहां आने वाले भक्तों के लिए सबसे कम दूरी वाला रास्ता है। यह एक पैदल आने व जाने का रास्ता है। परन्तु गसौड़ चौक से 500 मीटर पीछे का रास्ता है। जिससे वाहनों के आने-जाने के लिए सुविधा है। ताकि सभी भक्त अपने बूढ़े माता-पिता को भी मंदिर के दर्शन करवा सकें। जो कि पैदल यात्रा नहीं कर पाते हैं।

Introdution and location :-

मार्कंडेय मन्दिर बिलासपुर से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित मार्कंडेय ऋषि को समर्पित धार्मिक स्थल है। इस मन्दिर में भक्त ऋषि मार्कंडेय की पूजा करने के लिए जाते हैं। भले ही यह एक धार्मिक स्थल है। लेकिन मन्दिर की सुन्दरता भी दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करती है। ऋषि मार्कंडेय के पास एक झरना है जिसे बेहद पवित्र माना जाता है। क्योंकि इसमें औषधीय गुण पाए जाते हैं। मार्कंडेय जी की मूर्ति की भी एक अपनी अलग खासियत है।

भक्तों का यह भी मानना है कि ऋषि मार्कंडेय उन्हे कई शारिरीक बिमारियों का इलाज कर सकते हैं। कई निःसंतान दंपति संतान प्राप्ति की उम्मीद में ऋषि मार्कंडेय की पूजा करने के लिए आते हैं। इस लेख में आप मार्कंडेय ऋषि मंदिर की यात्रा से जुड़ी पूरी जानकारी को जानने वाले हैं।

मार्कंडेय ऋषि कथा :- (Rishi Markandeya Story) :-

एक पौराणिक कथा के अनुसार ऋषि मृकंडु, इस क्षेत्र में एक ऋषि अपनी पत्नी के साथ बच्चा पैदा करने में असमर्थ थे। उन्होनें कई वर्षों तक भगवान शिव से प्रार्थना की, ऋषि की भक्ति से खुश होकर उन्हे उन्हे भगवान शिव ने लड़के का आशीर्वाद दिया। जिसे ऋषि ने नाम दिया मार्कंडेय। लेकिन भगवान शिव ने यह भी कहा कि जब उसका लड़का 12 साल का हो जाएगा तो वे मर जाएगा। ऋषि इस बात को लेकर चिंतित था। क्योंकि उसे हर दिन यही डर रहता था। क्योंकि वो एक दिन अपने बच्चे को खो देगा। जब मार्कंडेय थोड़ा बड़ा हुआ और सब कुछ समझने लगा तो उसने अपने पिता से पूछा कि आप इतने चिंतित क्यों हो? सच्चाई जानने के बाद

मार्कण्डेय ने भगवान शिव से प्रार्थना कि जब भगवान शिव मार्कंडेय के सामने आए तो वह वैसाखी का दिन था। भगवान शिव मार्कंडेय के और समखण से काफी खुश हुए और उन्हे लम्बी आयु का वरदान दिया। उसी समय उस स्थान पर पवित्र झरना बहने लगा। इस झरने को चार धाम यात्रा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

इससे पहले जब यमराज जी मारकंडेय को 12 वर्ष पूर्व होने के बाद स्वर्ग को लेने आए तो मार्कंडेय जी भगवान शिवलिंग की मूर्ति से चिपक गए थे। और भगवान शिव ने यमराज जी से अनुरोध किया और मार्कंडेय जी को लम्बी आयु का वरदान दिया।

★ पवित्र जल धारा —:

यह मंदिर में प्राकृतिक रुप से उत्पन्न जल धारा है। इस जल से स्नान करने यहां हर साल लाखों सैनानी अथवा भक्त बड़ी दूर-दूर से आते हैं। इस जल से स्नान करने से अनेक प्रकार के चर्म रोगों से छुटकारा मिलता है तथा इस जल से नहाकर लोग अपने पापों को भी धोते हैं। मार्कंडेय मंदिर तीर्थ स्थानों में पवित्र थ स्थान माना जाता है।

★ घंटिया –:

यह मंदिर प्राय: काफी भागों में बंटा हुआ है। इस लिए यंहा घंटियों की संख्या काफी अधिक है। यहां घंटियों की संख्या लगभग 50 के करीब होगी। इन घंटियों के दर्शन नीचे दिए गए चित्र में है।

✳ घंटियों का चित्र ✳

यह घंटि मंदिर की सबसे बड़ी घंटी है तथा इसका वजन लगभग 20 से 30 किलो के करीब होगा तथा यह मंदिर में मुख्य मूर्ति के पास लगाई गई है।

★ मार्कंडेय जी की मुख्य मूर्ति —:

यह मूर्ति ऋषि मार्कंडेय जी की मुख्य मूर्ति है। यहां पर पुजारी (श्री राकेश संख्यान) जी बैठते हैं। वह दर्शकों और वहां पर आने वाले भक्तों को मार्कंडेय जी का आशीर्वाद लेने की अनुमति देते हैं तथा ऋषि मार्कंडेय के बारे में बताते हैं। यह मार्कंडेय जी की मूर्ति करीब 2 फीट होगी। जो कि मंदिर के पुजारी द्वारा वस्त्रों तथा गहनों से सजाई गई है। जैसा की चित्र में दर्शाया गया है।

[ऋषि मार्कंडेय जी]

★ राम मन्दिर :-

मार्कंडेय मन्दिर के सामने राम मन्दिर का निर्माण किया गया है। इस मन्दिर में राम, लक्ष्मण सीता और हनुमान जी की मूर्ति बनाई गई है। जो कि अत्यंत सुन्दर रूप से बनाया गया है। यहां पर भी दर्शक श्री राम जी की पूजा करने के लिए आते हैं।

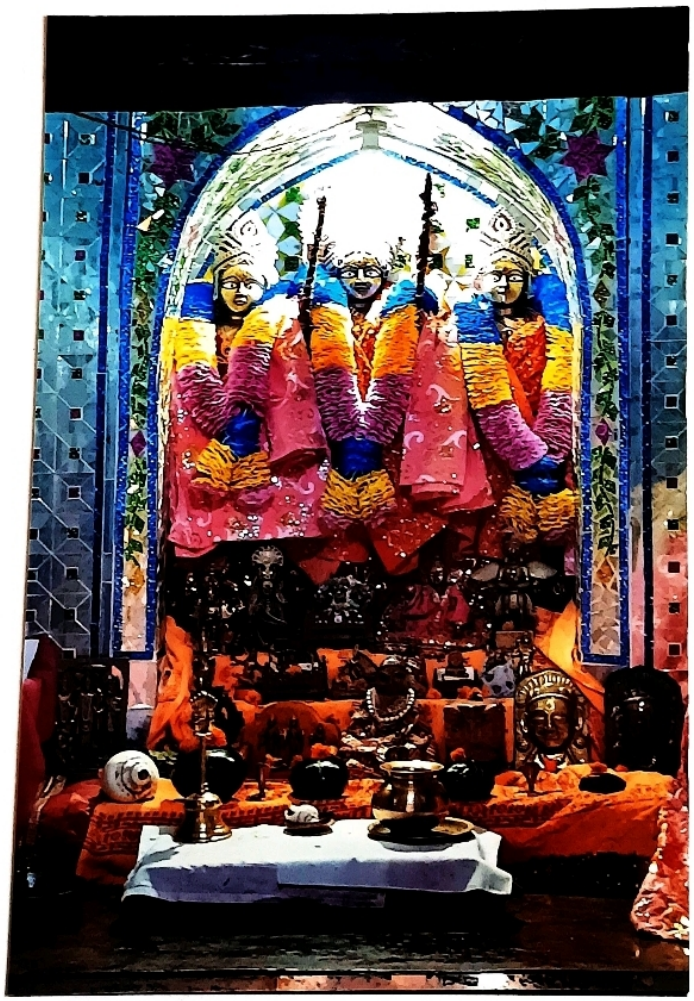

[राम मन्दिर]

★ हवन कुंड —:

मार्कंडेय मंदिर में विशाल हवन कुंड का निर्माण किया गया है। अग्नि के द्वारा देवताओं को पहुंचाने वाले सोम के लिए हवन कुंड का प्रयोग किया जाता है। हवन कुंड में अग्नि प्रज्वलित करने के बाद इस पवित्र अग्नि में फल, शहद, घी, काष्ठ (लकड़ी) आदि पदार्थों की आहुति प्रमुख होती है।

[हवन कुंड]

★ प्रमुख उत्सव व त्यौहार —:

वैशाखी व मार्कंड मेला इस क्षेत्र के मुख्य उत्सव व त्यौहार हैं। इस दिन लाखों श्रद्धालु मार्कंडेय मंदिर के प्राकृतिक जल से स्नान करने आते हैं। 13 अप्रैल से यह मेला शुरू हो जाता है तथा 5-6 दिन चलता है। इस मेले को वैशाखी का मेला भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त मेले में बहुत से देवी-देवता भी इस मेले की शोभा को बढ़ाते हैं।

पूजा अर्चना —:

इस मंदिर में दिन में दो बार पूजा की जाती है तथा इस मंदिर की पूजा में गांव के आस-पास के लोग पूजा करने के लिए आते हैं। पूजा का समय —:

सुबह — 06:00 बजे
शाम — 08:00 बजे व सर्दियों में 07:00 बजे।

मंदिर के खुलने व बंद होने का समय —:

सर्दियों में मंदिर सुबह 6 बजे तथा बंद शाम को 8 बजे तथा गर्मियों में मंदिर सुबह 5 बजे एवम् बंद शाम को 9 बजे होता है।

मंदिर कमेटी —:

मंदिर के सभी कार्यों का संचालन "ऋषि मार्कंडेय मंदिर कमेटी" के द्वारा होता है। official members => Sub division megistrate (Chairman) Debuty Superintendent of police. (Bilaspur) Member., Tehsildar. Sadar Distt language office (Bilaspur) Member Assistant Engineer.

★ लक्ष्य और उद्देश्य —:

इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य जुखाला क्षेत्र के स्थानीय देवी - देवताओं के मंदिरों की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि को जानना तथा उसका अध्ययन करना है।

प्रमुख प्रविधि —:

इस प्रोजेक्ट में हमें जुखाला के स्थानीय आधार पर विभिन्न लोगों से तथा मंदिर के कार्य कर्ताओं से मिलकर उनसे प्रश्न पूछकर मंदिरों के इतिहास के बारे में प्राथमिक आकड़ों को एकत्रित किया है।
इसके अतिरिक्त मंदिरों में जाकर मंदिर में ऐतिहासिक वस्तुओं को देखा तथा मंदिर कमेटी के कुछ सदस्यों से इनके संदर्भ में जानकारी प्राप्त की है।

विश्लेषण —:

इस प्रोजेक्ट रिपोर्ट को जुखाला क्षेत्र के मंदिरों की ऐतिहासिक तथा अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए तैयार किया गया है।

ऐतिहासिक भूमि —:

ऋषि मार्कंडेय मंदिर बहुत प्राचीन है। मान्यता के अनुसार कहा जाता है कि जो इस मंदिर में सच्चे दिल से सन्तान की मांग रखकर इस मंदिर में आता है उसकी मन्नत अवश्य पूरी होती है। क्योंकि ऋषि मार्कंडेय के माता - पिता ने उसे शिव भगवान जी से तपस्या करके मांगा था।

★ जलमग्न मन्दिर :–

पुराना बिलासपुर जो 1950 के दशक के अंत में जलमग्न हो गया था। गाद के अतिरिक्त चादर के बावजूद एक और सर्दियों के लिए ऊपर उठ जाता है।

[जलमग्न मन्दिर]

अन्य तीन मन्दिर अच्छी स्थिति में हैं। हांलाकि उनकी दीवारों पर लगे पत्थर जगह-2 ढीले हो गए हैं। बीच का मंदिर अन्य दो मंदिरों की तुलना में बड़ा है। यह मुख्यत: गोविंद सागर झील से जलमग्न हो गया है। यह मन्दिर हिन्दू शैली से निर्मित है। यह 170 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल में फैला हुआ है। जहां आसपास घास के मैदान हैं।

निष्कर्ष

Conclusion इस (Project Report) से मैंने अपने आस-पास के मंदिरों को बहुत गहराई से जाना। अंत में मैं इस (Historical Background of Temples of Jukhala) परियोजन को करते हुए मैंने जो अनुभव लिए हैं। मैं उन्हें अनुभवों को आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। मैंने किए गए विषयों में के बारे में सारी नई बातें सीखी। सबसे अच्छी बात, जो कि मैं आपके साथ साझा करना चाहता हूँ वह यह है कि मैंने इस विषय में अधिक रुचि विकसित की।

इस परियोजना में मुझे "भूगोल" (Geography) विषय की वास्तविक जानकारी प्रदान की है। हमारे लिए इस तरह के लक्ष्य निर्धारित करने के लिए हमारे अध्यापक श्री "सुदामा राम" जी को बहुत विशेष धन्यवाद। मैंने इस परियोजना में करने वाले हर एक कार्य का आनंद लिया।

धन्यवाद।

HISTORICAL BACKGROUND OF TEMPLE'S OF JUKHALA

PROJECT SUBMITTED BY

YAMAN.

CLASS ROLL No. 21150

HPU ROLL No. 12104400 82.

PROJECT SUBMITTED To

PROF. SUDAM RAM.

ASSOCIATE PROFESSOR.

DEPARTMENT Of GEOGRAPHY

GOVT. COLLEGE JUKHALA

BILASPUR H.P.

SESSION 2023-24.

★ **Location (1) :-**

⇒ National Highway (NH) से मंदिर की दूरी:

(1.1)

(1.2)

जैसा कि चित्र (1.1) और (1.2) मे दर्शाया गया है कि महर्षि मार्कण्डेय मंदिर की दूरी गसौड़ चौक (NH) से करीब 0.5 mil = 0.852 m है। जो कि यहा आने वाले भक्तो के लिए सबसे कम दूरी वाला रास्ता है। यह एक पैदल आने व जाने का रास्ता है। परन्तु गसौड चौक से 500 मीटर पीछे एक रास्ता है। जिससे वाहनो के आने-जाने के लिए सुविधा है। ताकि सभी भक्त अपने बूढे माता-पिता को भी मंदिर के दर्शन करवा सके। जो कि पैदल यात्रा नहीं कर पाते।

Introduction and Location -:

मार्कंडेय मन्दिर बिलासपुर से २० किलोमीटर की दूरी पर स्थित मार्कंडेय ऋषि को समर्पित धार्मिक स्थल है। इस मन्दिर में भक्त ऋषि मार्कंडेय की पूजा करने के लिए जाते है। अलेही यह एक धार्मिक स्थल है। लेकिन मन्दिर की सुन्दरता की भी दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करती है। ऋषि मारकंडेय के पास एक झरना है जिसे वेहद पवित्र माना जाता है। क्योंकि इसमे औषधीय गुण पाए जाते है। मार्कंडेय जी की मूर्ति की भी एक अपनी अलग खासियत है।

भक्तो का यह मानना है कि ऋषि मार्कंडेय उन्हे कई शारीरिक बिमारियों का इलाज कर सकते है। कई निःसंतान दंपति संतान प्राप्ति की उम्मीद मे ऋषि मार्कण्डेय की पूजा करने के लिए आते है। इस लेख मे आप मार्कण्डेय ऋषि मंदिर की यात्रा से जुडी पूरी जानकारी को जानने वाले है

मार्कण्डेय ऋषि कथा -: Rishi Markandeya story

एक पौराणिक कथा के अनुसार ऋषि मृकंडु इस क्षेत्र मे एक ऋषि अपनी पत्नी के साथ बच्चा पैदा करने मे असमर्थ थे। उन्होने कई वर्षो तक भगवान शिव से प्रार्थना की ऋषि की भक्ति से खुश होकर उन्हे भगवान शिव ने लडके का आशीर्वाद दिया। जिसे ऋषि के नाम दिया मार्कंडेय। लेकिन भगवान शिव ने यह भी कहा कि जब उसका लडका १२ साल का हो जाएगा तो वे मर जाएगा।

ऋषि इस बात को लेकर चिंतित था। क्योंकि उसे हर दिन यही डर रहता था कि वे एक दिन अपने बच्चे को खो देगा।

जब मार्कंडेय थोड़ा बड़ा हुआ और सब कुछ समझने लगा तो उसने अपने पिता से पूछा कि आप इतने चिंतित क्यों हो। सच्चाई जानने के बाद मार्कंडेय ने भगवान शिव से प्रार्थना की। जब भगवान शिव मार्कंडेय के सामने आए तो वह वैसाखी का दिन था। भगवान शिव, मार्कंडेय के और समरपण से काफी खुश हुए। और उन्हें लम्बी आयु का वरदान मिला। उसी समय उस स्थान पर पवित्र झरना बहने लगा। इस झरने को चार धाम यात्रा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

इससे पहले जब यमराज जी मारकण्डेय भगवान को 12 वर्ष पूर्व होने के बाद स्वर्ग को लेने आए तो मार्कण्डेय जी भगवान शिवलिंग की मूर्ति से चिपक गए थे। और भगवान शिव ने यमराज जी से अनुरोध किया और मार्कंडेय जी को लम्बी आयु का वरदान दिया।

चित्र - 1

यह चित्र मार्कंडेय भगवान के बाहर का चित्र दर्शाया गया है। मंदिर में जाने के लिए दो प्रवेश बनाए गए है। मारकण्डेय के आगन में मारबल का पत्थर लगाया गया है। मारकण्डेय भगवान के ऊपर भी मारबल के पत्थर से छत बनाया गया है। मंदिर के पिछे एक बडी पहाडी है। इस के बीच से ही झरना बहता हुआ आता है। इस पहाडी के ऊपर बंदला धार है।

श्री राम मंदिर

यह जो चित्र है। श्री राम भगवान का है। यह मंदिर मारकण्डेय भगवान के साथ ही स्थित है। यह मंदिर भी बहुत सुन्दर बनाया गया है। इसमे भगवान श्रीराम के साथ सिता माता, लक्ष्मण भगवान और पैरो के भगवान हनुमान है। यह सब देखने मे बहुत सुन्दर लगता है। सुबह प्रात: ही सबसे पहले पुजा राम मंदिर मे ही कि जाती है।

पवित्र जल धारा

यह मंदिर में प्राकृतिक रूप से उत्पन्न जल धारा है। इस जल से स्नान करने पर हर साल लाखों श्रद्धालु/ भक्त आते हैं। इस जल से स्नान करने से अनेक प्रकार के चर्म रोगों से छुटकारा मिलता है तथा लोग इस जल से नहाकर अपने पापों को भी धोते हैं।

☆ घंटिया –:

यह मंदिर प्रायः काफी भागो मे बंटा हुआ है। इस लिया यहा घंटियो की संख्या काफी अधिक है। यहां घंटियो की संख्या लगभग ६० के करीब होगी इन घंटियो के दर्शन ऊपर दिए गए चित्र मे है।

यह घंटि मंदिर की सबसे बड़ी घंटी है। तथा इसका वजन लगभग २० से ३० किलो के करीब होगा तथा यह मंदिर मे मुख्य मूर्ति के पास लगाई गई है।

हवन कुंड

यह चित्र हवन कुंड का है। हवन कुंड मारकण्डेय भगवान के सामने बनाया गया है। इस हवन कुंड मे बहुत लोग हवन कराते है। जब कोरोना वायरस आया था तब लोगो ने इस वायरस से बचने के लिए यहा हवन कराया था इस हवन मे लगभग सभी कुसाला क्षेत्र के लोग शामिल थे।

प्रमुख उत्सव व त्योहार-:

बैशाखी व मार्कण्ड मेला इस क्षेत्र के मुख्य उत्सव व त्योहार है। इस दिन लाखो श्रद्धालु मार्कंडेय मंदिर के प्राकृतिक जल से स्नान करने आते है। मार्कंडेय मे रहने वालो लोगो का यह मानना है कि भगवान शिव भी हर साल किसी न किसी रूप मे स्नान करने के लिए आते है। 13 अप्रैल से यह मेला शुरू हो जाता है तथा 5-6 दिन चलता है इस मेले को बैशाखी का मेला भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त मेले मे बहुत से देवी-देवता भी इस मेले की शोभा बढाते है।

पूजा अर्चना-:

इस मंदिर मे दिन दो बार पूजा की जाती है। शाम के समय मे भी पूजा की जाती है। इस पूजा मे ढोल और घंटिया बजती है। इस पूजा मे गाव के आस पास के लोग पूजा करने के लिए आते है। पूजा का समय

सुबह-: 05:00 बजे और 06:00 बजे
रात :08:00 बजे व सर्दियो मे 07:00 बजे

मंदिर के खुलने तथा बंद होने का समय-:

सर्दियो मे मंदिर सुबह 5 बजे तथा बंद शाम को 8 बजे तथा गर्मियो मे सुबह 4 बजे तथा बंद 9 बजे होता है।

लक्ष्य और उद्देश्य :-

इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य जुखाला क्षेत्र के स्थानीय देवी देवताओं के मंदिरों की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि को जानना तथा उसका अध्ययन करना है।

प्रमुख प्रविधि :-

इस प्रोजेक्ट में हमने जुखाला के स्थानीय आधार पर विभिन्न लोगों से तथा मंदिर के कार्य कर्ताओं से मिलकर उनसे प्रश्न पूछकर मंदिरों के इतिहास के बारे में प्राथमिक आकड़ों को एकत्रित किया है।
इसके अतिरिक्त मंदिरों में जाकर मंदिर में ऐतिहासिक वस्तुओं को देखा तथा मंदिर कमेटी के कुछ सदस्यों से इनके संदर्भ में जानकारी प्राप्त की है।

विश्लेषण :-

इस प्रोजेक्ट रिपोर्ट को जुखाला क्षेत्र के मंदिरों की ऐतिहासिक तथा अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए तैयार किया गया है।

मार्कंडेय जी की मुख्य मूर्ति :-

यह मूर्ति ऋषि मार्कंडेय जी की मुख्य मूर्ति है यहा पर पुजारी जी बैठते है। और दर्शको व/ भक्तो को मार्कंडेय जी का आशीर्वाद लेने की अनुमति देते है तथा ऋषि मारकण्डेय के बारे मे बताते है। यहा मार्कण्डेय जी की मूर्ति करीब २० फीट होगी। यह मूर्ति हरियाणा मे बनाई गई है।

[ऋषि मार्कंडेय जी]

निष्कर्ष

Conclusion इस (Project report) से मैंने अपने आस-पास के मंदिरों को बहुत गहराई से जाना।
अंत: मे, मैं इस ["Historical Background of temples of Jukhala"] परियोजना को करते हुए मैंने जो अनुभव लिए है। मैं उस अनुभवों को अपने साथ सांझा करना चाहता हूँ। मैंने लिए गए विषयों के बारे मे सारी नई बाते सीखी। सबसे अच्छी बात, जो की मैं आपके साथ सांझा करना चाहता हूँ वह यह है कि मैंने इस विषय मे अधिक रुचि विकसित की।

इस परियोजना मे हमे "भूगोल (Geography) विषय की वास्तविक जानकारी प्रदान की है। हमारे लिए इस तरह के लक्ष्य निर्धारित करने के लिए हमारे अध्यापक श्री "सुदामा राम" जी को बहुत विशेष धन्यवाद। मैंने इस परियोजना मे करने वाले हर एक कार्य का आनंद लिया।

धन्यवाद।